

जैसे रखोगी मैं <sup>ssss</sup> ऐसे ही रहूँगा <sup>ssss</sup> रहूँगा ॥२॥  
तेरा संदेश जग में <sup>ssss</sup> निर्भय कहूँगा <sup>ssss</sup> जैसे रखोगी.....

① विधि है-विधाता की, अबोध के शक्ति <sup>ssss</sup>

विधि से विधान निमित्त, विधियों से भक्ति <sup>ssss</sup>

निश्चय भावना से, मैं को ही भजूँगा <sup>ssss</sup> जैसे रखोगी..... तेरा संदेश.....

② ये सृज ये चरों, विधि के सहारे <sup>ssss</sup>

विधि से चमकते, गगन के तारे <sup>ssss</sup>

विधियों से रोशन मैं <sup>ssss</sup> जहाँ को कहूँगा <sup>ssss</sup> जैसे रखोगी..... तेरा संदेश.....

③ जबसे ये मानव, विधियों को भूला <sup>ssss</sup>

चिन्ता के भूले में, रोता हुआ भूला <sup>ssss</sup>

विधियों की शक्ति से, मैं को पास कहूँगा <sup>ssss</sup> जैसे रखोगी..... तेरा संदेश.....

④ "श्रीगवात्री" मैं <sup>ssss</sup> शरण तुम्हारे <sup>ssss</sup>

तेरी दया के देखे, आँखों नज़ारे <sup>ssss</sup>

आँखों के दर्दों को, हँसके में सहूँगा <sup>ssss</sup> जैसे रखोगी..... तेरा संदेश.....